SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

बर्नियर की यात्रा वृतांत और उसमें वर्णित भारतीय संदर्भ

तनुजा गुप्ता, शिक्षा विभाग,
मॉ विन्ध्यवासिनी कॉलेज ऑफ एजुकेशन, पद्मा, हजारीबाग, झारखंड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author :
तनुजा गुप्ता, शिक्षा विभाग,
मॉ विन्ध्यवासिनी कॉलेज ऑफ एजुकेशन, पद्मा, हजारीबाग, झारखंड, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 11/03/2020
Revised on : -----
Accepted on : 18/03/2020
Plagiarism : 01% on 12/03/2020

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 1%

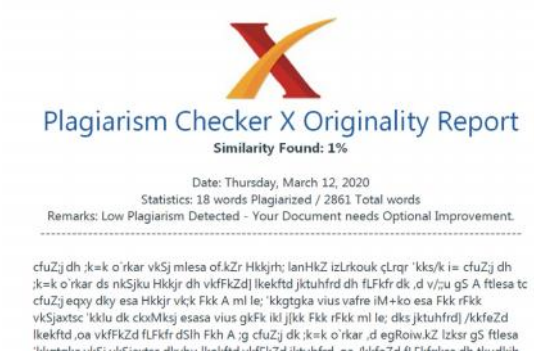

Date: Thursday, March 12, 2020
Statistics: 18 words Plagiarized / 2861 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

cfuZ;j dh ;k=k o`rkar vkSj mlesa of.kZr Hkkjrh; lanHkZ izLrkouk çLrqr 'kks/k i= cfuZ;j dh ;k=k o`rkar ds nkSjku Hkkjr dh vkfFkZd] lkekftd jktuhfrd dh fLFkfr dk ,d v/;;u gS A ftlesa tc cfuZ;j eqxy dky esa Hkkjr vk;k Fkk A ml le; 'kkgtgka vius vafre iM+ko esa Fkk rFkk vkSjaxtsc 'kklu dk ckxMksj esasa vius gkFk ikl j[kk Fkk rFkk ml le; dks jktuhfrd] /kkfeZd lkekftd ,oa vkfFkZd fLFkfr dSlh Fkh A ;g cfuZ;j dk ;k=k o`rkar ,d egRoiw.kZ lzksr gS ftlesa

प्रस्तावना :–

प्रस्तुत शोध पत्र बर्नियर की यात्रा वृतांत के दौरान भारत की आर्थिक, सामाजिक राजनीतिक की स्थिति का एक अध्ययन है। जिसमें जब बर्नियर मुगल काल में भारत आया था। उस समय शाहजहां अपने अंतिम पड़ाव में था तथा औरंगजेब शासन का बागडोर में अपने हाथ पास रखा था तथा उस समय को राजनीतिक, धार्मिक सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति कैसी थी। यह बर्नियर का यात्रा वृतांत एक महत्वपूर्ण स्रोत है जिसमें शाहजहां और औरंगजेब कालीन सामाजिक आर्थिक राजनीतिक एवं धार्मिक स्थितियों की जानकारी मिलती है। बर्नियर के ग्रंथ से शाहजहां और औरंगजेब का कालीन कुछ ऐसी बातों की जानकारी होती है जिसकी चर्चा तत्कालीन अन्य देशयी जैसी स्रोतों में उपलब्ध नहीं है। बर्नियर की यात्रा वृतांत से कई विद्वान इत्तेफाक नहीं रखते हैं बावजूद इसके महत्व को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है बर्नियर की यात्रा वृतांत से यह ज्ञात होता है कि भारत में हिंदुओं की संख्या अधिक थी तथा डच फ्रेंच एवं अन्य वर्ग के लोग भी रहते थे हिंदुओं में राजपूत और मराठे काफी शक्ति थी। हिंदू मुस्लिम ज्योतिश्यिों की भी चर्चा की गई है।

मुख्य शब्द :–

सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा धार्मिक जीवन पर प्रकाश।

परिचय :–

बर्नियरफ्रांस का रहने वाला था । वह एक चिकित्सक राजनीतिक दार्शनिक तथा एक इतिहासकार था। कई तरह की विदेश यात्रा के यह भी भारत मुगल साम्राज्य में अपसरों की तलाश में आया था। वह 1656 से 1668 ई0 तक भारत में 12

वर्ष तक रहा और मुगल दरबार से नजदीकी रूप से जुड़ा रहा।

राजनैतिक स्थिति :–

बनियर का यात्रा विवरण का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि मुगल साम्राज्यकी अधिकांश गतिविधियों को उसने काफी करीब से देखा था। राजपरिवार के सात सदस्यों– शाहजहाँ, दारा शिकोह, सुल्तान शुजा, औरंगजेब, मुराद बख्श, शहजादी बेगमसाहब और रौशन आरा बेगम– को आधार बनाकर उसने सत्रहवीं शताब्दी के राजनीतिक स्थिति पर प्रकाश डाला है। शाहजहाँ की जो तस्वीर उसने पेश की है, उससे पता चलता है कि शाहजहाँ में अपने पूर्वजों की अपेक्षा योग्यता का अभाव था। वह दाराशिकोह को इस तरह अपने से सटाये रखा कि शेष पुत्र अपने पिता को शक की नजर से देखने लगे। विदेशियों का आगमन उसके काल में हुआ किन्तु उनका सही उपयोग करने में शाहजहाँ असफल रहा। ईरानी राजदूतों से वह इतना मजाक किया करता कि उपयोगी बातें नहीं हो पाती थी। विलासी जीवन उसे बेहद पसन्द था। औरत और शराब का वह विशेष रूप से शौकीन था। परिणामस्वरूप साम्राज्य के कार्यों का भार मुख्य रूपसे दारा शिकोह के कन्धे पर होता था। दारा शिकोह का कंधा इतना मजबूत नहीं था। फलतः दरबार में उसके विरूद्ध षडयंत्र का वातावरण बनने लगा। दारा के विरूद्ध उसकी बहन रोशन आरा भी थीं। राज्य के उच्चाधिकारियों के साथ दारा शिकोह का व्यवहार ठीक नहीं रहता था। वह अंधविश्वासी भी था और इसलिए हिन्दू पंडित उसे सदा घेरे रहते थे। इसका असर कट्टर मुसलमानों पर ठीक नहीं पड़ा। वह ईसाइयों के प्रतिसहानुभूति दिखाता क्योंकि ईसाई लोग उसके तोपखाने में नौकर थे। हिन्दूपन प्रकट करने का कारण यह था कि साम्राज्य के प्रतिष्ठित राजाओं और सरदारों का वह पूर्णसमर्थन प्राप्त कर सके। इस्लाम, ईसाई एवं हिन्दू धर्म के बीच पड़कर वह न केवल अपने उद्देष्य में असफल हुआ बल्कि अंत में उसे प्राणों से भी हाथ धोना पड़ा।

सुल्तान शुजा आनन्द प्रेमी और विलास रस में डूबना पसंद किया करता था। जिस समय सुन्दरियों के जमघट में वह बैठता उस समय नाच रंग, गान तान औरमद्यपान में दिन–दिन और रात–रात भर बीत जाते थे। ऐसे रंगतान में दिन बीतने के कारण उसके प्रान्त का राज्य–संबंधी कारोबार बिगड़ने लगा और प्रजा का प्रेम उस पर से दिन पर दिन कम होता गया। षुजा षिया धर्म का माननेवाला था जबकि अन्यसदस्य सुन्नी थे।

औरंगजेब दृढ़ विचार का था। वह ऐसी बुद्धिमानी के साथ काम करता था कि उसके भाई दारा शिकोह को छोड़ दरबार के सभी लोग उसकी चतुराई को समझने में धोखा खाते । षाहजहाँ के विचार औरंगजेब के विशय में उँचे थे। इससे दारा को ईर्श्याहोती थी। अपनी मित्रमंडली में बैठक दारा कभी–कभी काम करता था, अपने भाईयों मेंसे मुझे सिर्फ एक ही का सुबहा और खौफ है। वह और किसी का नहीं, इन्हीं हजरतदीनदार और नमाजी साहब औरंगजेब का।

शाहजहाँ के चौथे पुत्र मुराद बख्श का अधिक समय शिकार तथा भोजन में बीतता था। वह साहसी तथा वीर था किन्तु बुद्धिमान नहीं। शाहजहाँ की बड़ी बेटी बेगम साहब अत्यन्त रूपवती और पिता की प्यारी थी। बादशाह की इच्छा का बागडोर उसी के हाथ में थी। वह दारा के प्रति काफी सहानुभूति रखती थी। वह विलासी भी काफी थी। कई पुरुषों के साथ उसके गुप्त प्रेम संबंध थे। दूसरी बेटी रौशन आरा मौज–मस्ती करनेवाली चंचल और विलासिनी थी। धोखेबाजी और चतुराई में निपुण होन के कारण बराबर आवश्यक बातों की सूचना जासूसों द्वारा औरंगजेब के पास पहुँचती रहती थी।

शाहजहाँ के चारों पुत्रों में एकता का अभाव था। यद्यपि दारा अपने पिता को बहुत चाहता और उसका अदब करता था, किन्तु शाहजहाँ उसके प्रति मन में कपट रखता था। उसे शाहजहाँ सदा विष दिए जाने की चिंता लगी रहती थी। शाहजहाँ का मानना था कि औरंगजेब ही राज्य षासन के लिए योग्य था और छिपे–छिपे वह औरंगजेब से पत्र–व्यवहार भी किया करता था। इस तरह औरंगजेब की स्थिति सर्वाधिक सुदृढ़ थी। उसने भाइयों को कुचलकर और शाहजहाँ को कैद कर बादशाह बन बैठा।

यह बात काफी लोकप्रिय है कि औरंगजेब ने शाहजहाँ को कैदखाने में कैद करदिया और काफी कष्ट में रखा, बर्नियर बताता है कि शाहजहाँ के लिए किले के सभीद्वार बंद कर दिये गये। वह बाहरी व्यक्तियों के साथ बातचीत और पत्र–व्यवहार नहीं कर सकता था। शाहजहाँ को किले में नजरबंद करने का कारण यह था कि औरंगजेबके विरूद्ध दारा को लिखे कई पत्रों में से कुछ पत्र औरंगजेब के हाथ लग गये थे। उसने औरंगजेब के विरूद्ध अशर्फियों से लदे हाथी दारा को भेजने का प्रयास किया था। इन्हीं सब कारणों से शाहजहाँ को कैद किया गया था। औरंगजेब के इस कारनामे का विरोध किसी अमीर एवं सरदार ने नहीं की।

औरंगजेब जब अभियान पर निकलता तो सिपाहियों का साहस तथा उत्साह बढ़ाने के लिए सेना के आगे–आगे चलता था। इसके अतिरिक्त साधारण सिपाहियों की भाँति खरा–मीठा पानी और रूखी रोटी पर संतोष करता और रात को केवल साधारण बिस्तर बिछाकर उसी पर लेट रहता था। शाहजहाँ को उन बादशाही महलों में रहने की अनुमति दी गई थी जिनमें वह पहले रहा करता था। उसकी बेटी बेगम साहब उससे मिलने आया करती थी। नाचने–गाने वाली स्त्रीयाँ सदा उपस्थित रहती थीं। मुल्ला उसके पासजाकर धर्मिक पुस्तक पढ़कर सुनाते थे। हिरणों की लड़ाई का तमाशा देखने की उसे अनुमात थी। औरंगजेब का बर्ताव शाहजहाँ के साथ कपा और श्रद्वा से खाली नहीं था। वह उसके पास अधिकता से भेंट की वस्तुएँ भेजा और राजनीति के विषयों में उसकी सलाह अति उत्तम और उपकारी समझकर ग्रहण करता था। शाहजहाँ का क्रोध अब धीरे–धीरे शांत हो गया और वह औरंगजेब को लिखने–पढ़ने लगा। दारा षिकोह की पुत्री को उसने औरंगजेब के पास भेज दिया और उन बहुमूल्य रत्नों को भी स्वयं उसके औरंगजेब के पास भिजवा दिया जिनके विषय में पहले वह कहा करता था कि यदि माँगोगे तो इनको कूट–कूट कर चूर कर दूंगा।

आन्तरिक कलह की समाप्त कर औरंगजेब दक्षिण की ओर ध्यान दिया औरमराठी, गोलकुंडा और बीजापुर को कुचल डाला।

समाजिक स्थिति :–

बर्नियर ने तत्कालीन सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डाला। समाज में मुसलमानों से ज्यादा हिन्दुओं की संख्या थी। डच, फ्रेंच एवं अन्य वर्ग के लोग भी रहते थे। हिन्दुओं में राजपूत और मराठे काफी शक्तिशाली थे। हिन्दू–मुस्लिम ज्योतिषियों की चर्चा की गई है। दिल्ली में ये लोग राह चलतो को धोख देते थे। एक पैसा लेकर ये लोग किसी का भविष्य बता देते थे। ये लोग मुहूर्त बतलाते और नासमझ स्त्रायाँ सिर से पैर तक सफेद चादर ओढ़ कर उनके निकट खड़ी रहती थीं। एक दोयम दर्जे का पुर्तगीज भी भविष्य बताकर लोगों को ठगा करता था। स्वयं बादशाह तथा बड़े–बड़े अमीर इन धोखेबाज भविष्यवक्ताओं को लम्बे चौड़े वेतन देते औरबिना इनकी सलाह के साधरण काम भी आरंभ नहीं करते थे।

तत्कालीन समाज में वही मकान अधिक बेहतर समझा जाता था, जिसमें सब प्रकार का आराम मिले और चारो ओर से विशेष कर उत्तर से अच्छी हवा आती हो। अच्छे घरों में फर्श के उपर चार अंगुल मोटा गदा बिछा रहता था। मुस्लिम मकानों में मनुष्य याकिसी और जीवित पदार्थ की तस्वीर नहीं होती थी क्योंकि धार्मिक दृष्टि सें ऐसा वर्जित था।

शिल्पकार अनेकों प्रकार की वस्तुएँ बनाते थे। धनाढ्यों का काम कारीगर बिना मजदूरी का करता क्योंकि कोड़ों की मार से बचने के लिए ऐसा करना जरूरी था। कुछ कारीगर मात्र अपने स्वामी की वस्तुएँ ही बनाते थे। कारीगरों को संतोष और सुख मिलने की कभी आशा नहीं होती, इसलिए यदि रूखा–सुखा टुकड़ा खाने को और मोटा–छोटा कपड़ा पहनने को मिल जाए तो उसी को वह बहुत समझता था। किसानों एवं व्यापारियों का शोषण तहसीलदार द्वारा किया जाता था। समाज में वास्तव में दो ही वर्ग था– धनाढ्यों का एवं गरीबों का। धनाढ्यों को काफी सुविधाएँ थीं। अधिकांश लोग मूर्ख और अनपढ़ थे। ऐसे में ये अधिकांश लोग उच्च पद प्राप्ति की आकांक्षा भी नहीं कर सकते थे और इन्हें प्राप्त भी नहीं होता था।

आर्थिक दृष्टि से बर्नियर के अनुसार दिल्ली एक प्रसिद्व व्यापारिक नगर था। मुख्यमार्ग की दोनों तरफ दुकानें थीं। मूल्यवान वस्तुएँ व्यापारी छुपाकर रखते थे। बाजार मेंएक साथ पश्मीना, कगखाब, जरीवार, मन्दीलें, रेशमी वस्त्र, चगिल, जी, तेल, धान, गेहूँ, मेवा, फल, किशमिश, भैर, शतालू, अंगूर, बादाम, पिस्ता, परमूजा, पान, नाशपाती, आग, मिठाई, रोटी, दूध, मक्खन, अंडा, उँट, घोड़ा और ख का गाँस, मिलिया, पानी, विदेशी, शराब, आभूषण, वस्त्र, जूता, पगड़ी, लकड़ी एवं काश्य की परत आदि बिकती थी। आगरा एक प्रसिद्ध व्यापारिक एवं प्रशासनिक शहर था। काशी नगरी शिक्षा को लिए प्रसिद्ध थी। हिन्दुओं का यह प्रसिद्ध धर्म केन्द्र था। यहाँ धनी शाहुकारों की संख्या काफी थी। लाहौर के व्यापारिक गतिविधियों पर बनियर गे प्रकाश नही डाला है कश्मीर कोकारीगर पालकी पलंग के पाये, संदूक, कगलदान और चगये बनाने में निपुण थे। ये लोगगहीन सुनहरी तारों को किसी चीज में जमाकर ऐसी सुन्दरता से लकड़ी पर लगाते और चित्रकारी करते जिसका मुकाबला नहीं किया जा सकता था। शाल बनाने और बेचने का काम यहाँ बड़े पैमाने पर होता था। शाल दो प्रकार के होते थे। एक तो कश्मीरी ऊन से बनता था जो काफी मुलायम और उन्नत होता था। दूसरे प्रकार का शाल जिरा ऊन से बनता उसे तीज कहते थे। तीज नामक उफन तिब्बत की एक प्रकार की बड़ी बकरियों की छाती पर से उतारा जाता था। अमीरों के लिए विशेष प्रकार की शाल बनाई जाती जिसका मूल्य डेढ़ सौ रुपये के करीब होता था।

बंगाल मुरब्बे के लिए प्रसिद्ध था। पुर्तगाल वाले बढ़िया मुरब्बा बनाते और उसका व्यापार करते थे। वे लोग आम, अन्नास, ऑवले, नीम्बू और अदरख का गुरच्या बनाते थे। यहाँ का रेशम व्यापार विश्व प्रसिद्ध था। महीन, मोटे, सफेद और रंगीन वस्त्र यहाँ बनाये जाते थे। यहाँ से सूती एवं रेशमी वस्त्र जापान एवं यूरोप के देशों में निर्यात किए जाते थे। यहाँ से शोरा, घी, गोंद, अफीम, मोम, कस्तूरी, औषधियाँ आदि निर्यात किए जाते थे। बंगाल के बाजार में शराब, तम्बाकू, अनाज आदि बिकता था। यहाँ के कारीगर कालीन, किमखाब, चिक, कारचौबी और जरदोजी बनाने में निपुण थे।

संसार में घूम–घूम कर चाँदी, सोना जब भारतवर्ष में पहुँचता तो यहीं खप जाता था। टर्की, यमन तथा ईरान की भारतीय वस्तुओं की आवश्यकता बनी रहती थी। भारत का माल पेगू, तेनासरीम, सिलोन, मगासर, मलयद्वीप, मोजाम्बिक आदि के बाजारों में बिकता था।

ताम्बा, लौंग, जायफल, दालचीनी और हाथियों का भारत आयात करता था। अन्तर्देशीय व्यापार पर डच व्यापारियों का प्रभुत्व था। यहाँ प्रतिवर्ष करीब 25000 घोड़े समरकंद, बुखारा, बलख और ईरान से मँगाये जाते थे। कौड़ियाँ मलाया द्वीप से आतीथीं जो बंगाल तथा दूसरे भागों में पैसे आदि के बदले कम मूल्य पर चलती थीं। गेंडें की सींग, हाथ दाँत और गुलाम इथोपिया से मँगाये जाते थे। चीन से मुश्क और चीनी बर्तनका आयात किया जाता था।

धार्मिक स्थिति :–

बाबर ने अपनी आत्मकथा में हिन्दू और मुसलमानों को हिन्दुस्तानी कह कर सम्बोधित किया है। मुगल साम्राज्य की स्थापना के बाद उसने प्रशासन के क्षेत्र में अधिकांष हिन्दुओं को अपने–अपने पद पर रहने दिया। चंदेरी विजय के बाद मेदिनी राय की दो राजकुमारियों की शादी मिर्जा कामरान तथा हुमायूँ से करके बाबर ने अपनीउदारता का परिचय दिया और इस तरह उसने अकबर की राजपूत नीति की पृष्ठ भूमि तैयार किया।

अपने उत्तराधिकारी हुमायूँ को परामर्श देते हुए बाबर ने कहा था कि भारतवर्ष में अनेक धर्मानुयायी रहते हैं तथा ऐसी परिस्थिति में तुम्हारा मस्तिष्क धार्मिक भावनाओं से प्रभावित नहीं होना चाहिए। उसे सभी धर्मों के प्रति सहानुभूति रखकर अपनी सम्पूर्ण प्रजा के प्रति यथोचित न्याय उचित होगा। गाय का वध न करके हिन्दुओं का सहानुभूति प्राप्त करना और मंदिरों को ध्वस्त न करके हिन्दुओं की कृतज्ञता को प्राप्त करने का प्रयास करना होगा। साम्राज्य में शांति रखना, हिन्दुओं के दमन की अपेक्षा प्रेम की तलवार से इस्लाम धर्म का प्रचार करना है, तथा शिया और सुन्नी के मतभेदों परकभी ध्यान न देना, क्योंकि इन सभी

बातों से इस्लाम की शक्ति क्षीण होगी। अतः प्रशासन तथा राजनीति को धर्म के अवगुणों से बचाना होगा। इस प्रकार बाबर प्रथम मुगल सम्राट था जिसने अच्छे हिन्दू–मुस्लिम सम्बन्ध का सूत्रापात किया। हुमायूँ ने आजन्म अपने पिता के उपर्युक्त आदर्शों का पालन किया तथा उसका अनुकरण किया। हिन्दुओं के प्रति उसके हृदय में विशेष स्थान था और हम पुष्टि इस तथ्य से भी होती है कि चौसा के युद्ध में एक हिन्दू भिस्ती ने उसकी प्राण रक्षा की। कृतज्ञता में एक दिन के लिए सम्राट ने उसे राजगद्दी पर भी बैठाया। चौसा से भागते हुए गहोरा के हिन्दू राजा ने भी उसकी सहायता की थी। मालवा अभियान के समय मंझू के सुझाव पर उसने हिन्दुओं की हत्या बन्द कर दी। राजा मालदेव ने उसे सहायता का आश्वासन दिया था। अर्सकीन तथा जेम्स टॉड के अनुसार हुमायूँ ने उसे सहायता का आश्वासन दिया था। अर्सकीन तथा जेम्स टॉड के अनुसार हुमायूँ ने मेवाड़ की रानी कर्णावती की राखी स्वीकार कर सच्चे भाई के रूप में रानी की सहायता करने के लिए प्रस्थान किया, किन्तु विशेष परिस्थितियों के परिणामस्वरूप वह उचित समय पर सहायता न कर सका। अमरकोट के हिन्दू शासक ने उसे अपने यहाँ शरण दिया था। यहीं पर राजकुमार अकबर का जन्म हुआ। इन परिस्थितियों और घटनाओं के परिणाम स्वरूप इस बात का परिचय मिलता है कि उसके हृदय में हिन्दुओं के प्रति सहानुभूति थी । अतः कहा जा सकता है कि सम्राट ने हिन्दू–मुस्लिम संबंध को अच्छाबनाने का सफल प्रयास किया था।

शेरशाह ने अपनी शासन–नीति में हिन्दू–मुसलमानों को समान रूप से सुविधाएँ प्रदान की तथा इन दोनों साम्प्रदायों के लिए अलग–अलग सरायों की व्यवस्था की। टोडरमल तथा बरमजीव गौड़ की नियुक्ति करके उसने हिन्दू–मुस्लिम समन्वय काएक मिसाल पेश की। उसके उत्तराधिकारी मुहम्मद आदिल शाह ने राजस्थान स्थित रेवाड़ी के धूसर बनिया हेमू को प्रधान सेनापति के पद पर नियुक्त किया।

मुगल सम्राट अकबर एक उदारवादी शासक था। वह भारतवर्ष को अपनी मातृभूमि तथा हिन्दू–मुस्लिम को अपनी प्रजा समझ कर समान रूप से सुविधा प्रदान करना चाहता था। मुहम्मद यासीन के अनुसार, 'अकबर का मुख्य उद्देश्य मुस्लिम सम्प्रदाय को भारतीय बनाकर राजनीतिक, सांस्कृतिक और धार्मिक दृश्य पटल पर एक रूपता प्रदान करना था।' हिन्दू–मुस्लिम असमानता/भेदभाव को दूर करने के लिए 1564 में जजिया कर एवं 1563 में तीर्थ यात्रा कर समाप्त करने की घोषणा की। 1562 में अमीर के शासक भारमल की राजकुमारी तथा जेसलमर के शासक राजा उदय सिंह की पुत्री से शादी करके हिन्दू–मुस्लिम संबंध की पृष्ठभूमि तैयार की। सम्राट अकबर ने राजकुमार सलीम का वैवाहिक संबंध भगवान दास की पुत्री तथा मानसिंह की बहन से 1584 में सम्पन्न कराकर अपने उत्तराधिकारी के भी दृष्टिकोण में परिवर्तन करने का सफल प्रयास किया। राजा भगवान दास, मान सिंह, टोडरमल, बीरबल को उच्च प्रशासनिक तथा सैनिक पदों पर नियुक्ति करके अपनी सौहार्दता तथा उदारवादी नीति का परिचय दिया। राजपूत नीति के अन्तर्गत रंथम्भौर के राजा सुरजन हाड़ा को विशेष सुविधाएँ प्रदान की।

धर्म के नाम पर उसकी सम्पूर्ण प्रजा अनेक समूहों में विभक्त थी। अतः वहदीन–इलाही के माध्यम से सम्पूर्ण प्रजा को एकता के सूत्र में बाँधना चाहता था। वह स्वयं सूर्य तथा अग्नि की उपासना करता था। हिन्दुओं की भाँति मस्तिष्क पर तिलक लगाता था। सम्राट अकबर रक्षाबंधन, दीवाली, दशहरा तथा होली का त्योहार हिन्दुओं की भाँति मनाता था। बदायूँनी तथा इसाई पादरियों के अनुसार उसने गोवध तथा मांसाहारपर प्रतिबंध लगाकर हिन्दुओं के प्रति सहानुभूति पूर्ण नीति का परिचय दिया। साहित्य के क्षेत्र में उसने अथर्ववेद, महाभारत तथा रामायण का अनुवाद फारसी भाषा में कराया। यही नहीं उसने लीलावती नामक गणित की पुस्तक का अनुवाद फारसी में कराकर हिन्दू साहित्य के प्रति अपनी सौहादर्यता का परिचय दिया। वास्तुकला तथा चित्रकला पर तो मुसलमानों का सहयोग स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इस प्रकार सम्राट अकबर ने हिन्दू मुसलमानों को राजनीतिक, धर्मिक तथा सामाजिक रंगमंच पर समान अधिकार एवं सुविधा प्रदान कर दोनों सम्प्रदायों के बीच व्याप्त विशमता भेद को समाप्त करने में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त किया।

मुगल सम्राट जहाँगीर का दृष्टिकोण हिन्दुओं के प्रति उदारवादी थी यह स्वयं रक्षाबंधन तथा दीवाली के त्योहारों में भाग लेता था। मेवाड़ के राजा कर्ण सिंह तथा अमर सिंह के साथ उसने सहानुभूतिपूर्ण नीति अपनाई। मानसिंह को प्रशासनिक एवं सैनिक पदों पर नियुक्त किया।

शाहजहाँ का शासनकाल रूढ़िवादिता तथा धर्माधता का युग माना जाता है। शाहनामा के लेखक के अनुसार, शाहजहाँ ने अनेक हिन्दू मंदिरों को ध्वस्त कराकर अपनी रूढ़िवादी धार्मिक नीति का परिचय दिया था। केवल बनारस में 76 मंदिरों को ध्वस्त कराया गया। जयसिंह और जसवंत सिंह को राज्य प्रशासन में स्थान देने के बावजूद भी धर्मिक धर्माधता का परित्याग नहीं किया। पाश्चात्य विद्वान गोल्डजिटर ने लिखा है कि अकबर की मृत्यु के बाद इस्लाम ने अपने वास्तविक स्वरूप को पुनः ग्रहणकर लिया।

हिन्दू मुस्लिम सम्प्रदायों को समीप लाने में राजकुमार दारा शिकोह का प्रयास अत्यंत प्रशंसनीय है। अपने जीवन काल में उसने हिन्दू धर्म, दर्शन का अध्ययन किया। रामायण, गीता तथा उपनिषद् का अनुवाद फारसी में कराया।

निष्कर्ष :–

बर्नियर का यात्रा वृतांत एक महत्वपूर्ण स्रोत है जिससे शाहजहाँ और औरंगजेब कालीन सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं धर्मिक स्थितियों की जानकारी होती है। बर्नियर के ग्रंथ से शाहजहाँ एवं औरंगजेब कालीन कुछ वैसी बातों की जानकारी होती है जिसकी चर्चा तत्कालीन अन्य देशीय स्रोतों में उपलब्ध नहीं है। बर्नियर के यात्रा विवरण से कई विद्वान इत्तेफाक नहीं रखते हैं, बावजूद इसके महत्व को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है।

संदर्भ सूची :–

1. *बेनी प्रसाद : जहाँगीर।*
2. *बाबर : फिन्थ अली ट्रेवेल्स।*
3. *बाबरनामा : तुजूके बाबरी।*
4. *बारबोसा : दि बुक ऑफ रेट बारबोसा।*
5. *बर्नियर : ट्रेवेल्स इन दि मुगल एम्पायर।*
6. *बनारसी प्रसाद सक्सेना : हिस्ट्री ऑफ शाहजहाँ ऑफ देहली।*
7. *ग्लोमैन : आइने अकबरी।*
8. *विन्सेन्ट स्मिथ : अकबर दि ग्रेट मोगल, ए शार्ट हिस्ट्री ऑफ फाईन आर्ट इन इंडिया एण्ड सीलोन*
9. *आई० एच० कुरैशी : दि एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ दि सल्तनत ऑफ देहली।*
10. *आई०एच० कुरैशी : दि मुगल एडमिनिस्ट्रेशन।*
11. *आई०एच० सिद्दिकी : दि नोवलिटी अण्डर दि खलजी सल्तान्स, इस्लामिक कल्चर।*
12. *ईश्वरी प्रसाद : हिस्ट्री ऑफ मेडिवल इंडिया, एक हिस्ट्री ऑफ करोनी एर्क्स, दि लाइफ एण्ड टाईम्स ऑफ हुमायूँ।*
13. *ई०बी० हेबेल : इंडियन आर्किटेक्चर।*
14. *ईश्वरी प्रसाद : लाइफ एण्ड टाइम्स ऑफ हुमायूँ।*
15. *ईश्वरी प्रसाद : हुमायूँ।*
16. *इरविन : लेटर मुगल्स।*

****